FEBRUARY 2021
M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7
8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21
22 23 24 25 26 27 28

WK 03 (016-349)
2021 JANUARY • SATURDAY 16

HISTORY HONOURS - II Paper

इंग्लैण्ड का इतिहास

B.A. Honours Part-I, Paper-III

Q. ट्यूडर निरंकुशवाद पर एक निबंध लिखें।

Ans → ट्यूडर वंश के शासकों के शासन को नवीन राजतंत्र (New Monarchy) कहते हैं। इसकी शुरुआत एडवर्ड चौथे के ही शासनकाल में हो गयी थी, परन्तु ट्यूडर-वंश के समय में इसका पूर्णरूपेण विकास हुआ। इंग्लैण्ड में ट्यूडर वंश का राज्य (1485 से 1603) करीब 120 वर्षों तक कायम रहा। इस नये राजतन्त्र की एक बहुत ही बड़ी विशेषता है - इसका निरंकुशता। ट्यूडर वंश के सभी शासक निरंकुश थे जो वास्तविकता से बहुत ही निकट है। इस तरह से ट्यूडर वंश के शासकों की निरंकुशता में सन्देह नहीं किया जा सकता है। ट्यूडर वंश की निरंकुशता की स्थापना के निम्नलिखित कारण थे:-

① विरोधी पक्ष की कमजोरी → मध्य-युग में सामन्तवाद और चर्च दो बहुत बड़ी तथा शक्तिशाली संस्थाएँ थीं। राजतन्त्र के साथ इनकी सीधी प्रतियोगिता थी। ये राज्य के भीतर राज्य के स्वरूप ही संस्थाएँ थी। उस काल में राज्य का विरोध करने वाले सामन्त और पादरी ही थे। परन्तु ट्यूडर वंश की स्थापना हो जाने के समय तक इनके भी दिन लद चुके थे। फलतः इनकी कमर टूट गयी थी।

गुलाबों के युद्ध में बहुत से सामन्त मार डाले गए थे। जो बचे थे वे लड़ते-लड़ते थक गये थे। बहुत लोगों की जमीन तथा सम्पत्ति उसके हाथ से निकल गयी थी। फलतः वे गरीब बन गये थे। इतना होने के बाद भी, बचे हुए सामन्तों की शक्ति को नष्ट कर देने में 7वें हेनरी ने कोई कसर नहीं उठा रखी थी। यहाँ तक कि उसने उन्हें निजी सैनिकों को रखने से भी रोक दिया था और उनसे न्याय का अधिकार

18 MONDAY • JANUARY • 2021

DECEMBER 2020

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

भी छिन लिया था। इस तरह दरबार उनका कोई स्थान नहीं रह गया था। विरोध करने वालो को कठोर दण्ड देने के लिए विशेष न्यायालयों की स्थापना भी कर दी गयी थी।

धर्मसुधार आन्दोलन का तीसरा भी हो गया था जिससे चर्च के अधिकारियों के सिर में दर्द पैदा हो गया था। उनके पुराने अधिकार तथा पदों पर आघात किया जा रहा था। प्रोटेस्टैंट दल उसका प्रबल विरोधी बन गया था। इसलिए वे लोग अपनी रक्षा हेतु राज्य की कृपा प्राप्त करने के लिए चिन्तित थे। 8 वा हेनरी तो अंग्रेजी चर्च से पोप को निकाल कर स्वयं उसका मुखिया बन गया था। इसके बाद भी इंगलैण्ड में प्रोटेस्टैंट धर्म प्रगति के पथ पर था। इस तरह से राज्य चर्च के अधिन हो गया। फलतः धर्म के अधिकारियों पर राजा का पूर्णरूपेण अधिकार हो गया। 13 वीं सदी के शुरू में साधारण लोगों ने भी राजा के विरुद्ध सामन्तों एवं पादरियों का साथ दिया था। परन्तु 16 वी सदी के शुरू तक स्वतन्त्र विचारवाले सर्वसाधारण वर्ग का विकास नहीं हो पाया था उनमें योग्य नेताओं का सर्वथा अभाव था। इसलिए उनमें राजाओं के विरोध की शक्ति एकदम नहीं थी। इसके अतिरिक्त मध्यम-वर्ग के लोग खासकर व्यापारी वर्ग अव्यवस्था और युद्ध से ऊबता गये थे और वे हर मूल्य चुका कर शान्तिमय जीवन के लिए तरस रहे थे वे लोग यह भली-भाँति जानते थे कि राजा ही देश में अमन-चैन रख सकता है।

(2) वैधानिक प्रयोग की असफलता → 15 वीं सदी में वास्तविक शक्ति राजाओं के हाथ में निकलकर संसद के हाथों में आ गयी थी। प्रारम्भ में लोग इसे अच्छा शासन समझकर बहुत ही प्रसन्न थे परन्तु अन्त तक उनकी आशा पर पानी फिर गया। वास्तविक वैधानिक प्रयोग का फल बड़ा ही बुरा निकला, जिसका अन्त गृह-युद्ध में जाकर हुआ। खेती तथा व्यापार चौपट हो गये जिससे लोगों का जीवन कष्टमय हो गया। लोगों की जिन्दगी और सम्पत्ति खतरे में पर गयी थी। अराजकता से सभी लोग त्रस्त थे इसलिए फिर से वैधानिक शासन के प्रयोग से उत्पन्न अराजकता की स्थिति को दुहराना कोई नहीं चाहता था। लेकिन इसके लिए सशक्त कार्यपालिका की आवश्यकता थी। जब 7 वीं हेनरी आया तब सबों ने इसका तहेदिल से स्वागत किया। इस संबंध में प्रसिद्ध इतिहासकार मैरियट का मत है कि "देश की संकटपूर्ण आर्थिक दशा को सुधारने के लिए ट्यूडर शासकों के निरंकुश शासन के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय संभव नहीं था।"

(3) बारूद और बन्दूक पर अधिकार → तोपों, बारूद तथा बन्दूकों पर राजाओं का एकाधिकार कायम हो गया। इनके सामने सामन्तों के सभी हथियार तथा अस्त्र-शस्त्र बेकार हो गये। अब राजाओं से लोग डरने लगे। फलतः विद्रोह को दबाना भी सुलभ हो गया। इस तरह राजाओं की शक्ति में वृद्धि हो गयी।

(4) पर्याप्त धन → पहले और बाद में ट्यूडर युग में कई राजाओं की गरीबी और विवशता उनकी परेशानी का कारण थी। इसी वजह से उन्हें हमेशा संसद का मुँह ताकना पड़ता था और

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

वे इनकी कठिनाई से लाभ उठाया करती थीं। ट्यूडर वंश के राजाओं ने इससे सबक सीखा और जायज - नाजायज ढंग से राजकीय कोष को भरने का प्रयत्न किया।

(5) संसद की कमजोरी → संसद के दोनों सदनों में ट्यूडर शासकों के अपने लोग ही भरे हुए थे। फिर शासकों और सदस्यों की स्वार्थ एक-दूसरे से टकराता नहीं था। इस तरह से संसद शासकों के हाथों में कठपुतली बन गई थी।

(6) राष्ट्रीयता की भावना → शतवर्षीय युद्ध के समय से ही इंग्लैण्ड और फ्रांस में राष्ट्रीयता की भावना पनपने लगी थी। 16 वीं सदी तक यूरोप के एक-दूसरे देशों में भी इस भावना का विकास होने लगा था।

(7) नये वर्ग का निर्माण → ट्यूडर राजाओं ने पुराने सामन्त तथा पादरी वर्ग का अन्त कर एक नये वर्ग का निर्माण किया था। इस वर्ग में वही लोग थे जो लोग राजाओं से जमीन प्राप्त किये थे।

(8) इस वंश के शासकों का व्यक्तित्व एवं चरित्र → एडवर्ड छठा एवं मेरी ट्यूडर को छोड़कर ट्यूडर वंश के तीन शासक बड़े योग्य थे। वे चतुर एवं दूरदर्शी थे। वे समय की गति को ठीक से पहचानते थे। वे माहिर कूटनीतिज्ञ भी थे। 7 वीं हैनरी ने अपनी कुशल नीति से अपने वंश की नींव सुदृढ़ कर ली थी। अतः ट्यूडर वंश के सभी शासक वास्तविक सत्ता से संतुष्ट थे। वे अपनी शक्ति का उपयोग करते थे।

(9) संक्रमणकाल **(10) संकटपूर्ण स्थिति**

इन्हीं सब कारणों से ट्यूडर वंश की निरंकुशता की स्थापना हुई।